E-Learning material prepared by Dr. Dhananjay Vasudeo Dwivedi, Assistant Professor, Department of Sanskrit, Dr. Shyama Prasad Mukherjee University, Ranchi

भीम का चरित्र चित्रण

डा० धनञ्जय वासुदेव द्विवेदी

सहायक प्रोफेसर, संस्कृत विभाग,

डा० श्यामा प्रसाद मुखर्जी विश्वविद्यालय, राँची

भीम एक दृढ़ प्रतिज्ञावान वीर साहसी पात्र है। भीम में क्रोध, स्फूर्ति और उत्साह का सजीव दर्शन प्राप्त होता है। उसके उत्साह से प्रभावित होकर युधिष्ठिर ने स्वयं प्रिय साहसी के नाम से सम्बोधित किया है। द्रौपदी के अपमान की भयंकर प्रतिक्रिया से उत्तेजित होकर कहता है कि बड़े भाई साहब पांच गांव की शर्त से सन्धि करें तो करें परन्तु मैं दुर्योधन के सौ भाइयों का वध अवश्य करूंगा। इसी भाव को व्यक्त करते हुये भट्टनारायण ने निम्न प्रकार लिखा है कि-

मथ्नामि कौरवशतं समरे न कोपाद् दुःशासनस्य रुधिरं न पिबाम्युरस्तः।

संचूर्णयामि गदया न सुयोधनोरू सन्धिं करोतु भवतां नृपतिः पणेन।।

दुर्योधन के द्वारा किये गये द्रौपदी के अपमान का बदला लेने के लिए कभी-कभी क्रोध में उचित-अनुचित को भी भूल जाता है। नाटककार ने भीम की गर्वोक्तियों का और उसके उद्धत स्वभाव का स्वाभाविक चित्रण बड़ी सफलता के साथ किया है।

कृष्णभक्त भीम- भीमसेन जब यह सुनता है कि सन्धि प्रस्ताव को लेकर ये हुये विश्वात्मा श्रीकृष्ण को दुष्ट दुर्योधन पकड़ना चाहता था और पकड़ न सका, इसी प्रसङ्ग में भीमसेन कहता है अरे दुष्ट दुर्योधन तुम भगवान् श्रीकृष्ण के वास्तविक रूप को नहीं जानते हो। अरे तुझ मूर्ख के द्वारा श्रीकृष्ण का वास्तविक रूप जाना भी कैसे जा सकता है क्योंकि-

आत्मारामा विहितमतयो निर्विकल्पे समाधौ ज्ञानोद्रेकाद्विघटितमोग्रन्थयः सत्त्वनिष्ठाः।

यं वीक्षन्ते कमपि तमसां ज्योतिषां वा परस्तात् तं मोहान्धः कथमयममुं वेत्तु देवं पुराणम्।।

इससे भीम का श्रीकृष्ण के प्रति असाधारण भक्तिभाव ध्वनि व्यंजित हो रही है।

असाधारण साहसी एवं वीर- जिस समय भीमसेन युद्धभूमि में दुःशासन को घेर लेता है, तो अहंकारपूर्वक कहता है कि अरे कौरवों में नीच बहुत समय के बाद मेरे सामने आया है। रे नीच पशु! अब कहाँ जायेगा। अरे कर्ण, दुर्योधन, अश्वत्थामा आदि पाण्डवों के शत्रुओं, शस्त्र धारण करने वाले वीरों आप लोग सुनिये। जिस नीच नरपशु ने राजा द्रुपद की पुत्री के बालों का स्पर्श किया था, जिसने राजाओं और पूज्यजनों के सामने द्रोपदी के वस्त्रों को खींचा था, मैंने जिसके वक्षस्थल से रक्तरूपी मंदिरा पीने की प्रतिज्ञा की थी वह नीच पशु दुःशासन मेरी भुजाओं के पिंजरे में आ गया है, उसकी आप लोग रक्षा करें। इसी भाव को व्यक्त करते हुये भट्टनारायण ने निम्न प्रकार लिखा है-

कृष्टा येन शिरो नृपशुना पाञ्चालराजात्मजा
येनास्याः परिधानमप्यहृतं राज्ञां गुरूणां पुरः।
यस्योरःस्थलशोणितासवमहं पातुं प्रतिज्ञातवान्
सोऽयं मद्भुजपञ्जरे निपतितः संरक्ष्यतां कौरवः।।

इससे भीम का असाधारण उत्साह और वीरता तथा गर्वोक्ति स्पष्ट सिद्ध होती है। भीमसेन के उद्धत स्वभाव एवं क्रोध से भयभीत दुर्योधन दुःशासन का बर्बर वध सुनकर कहता है कि-

"अपि नाम भवेन्मृत्युः न च हस्ता वृकोदरः"।

इसके पश्चात् भीम और अर्जुन एक रथ पर सवार हुये दुर्योधन को खोजते हुये आ रहे हैं तो दुर्योधन के भागते हुये सेवकों से भीम कहता है कि तुम सब हम दोनों से मत डरो क्योंकि हम तो उस दुर्योधन को खोज रहे हैं, जो कपट के साथ द्यूत क्रीड़ा का आयोजन करने वाला, लाख के घर में आग लगाने वाला, अहंकारी, तथा द्रौपदी के बालों और वस्त्रों को हरण करने वाला है। हम दोनों क्रोध से यहीं नहीं आये हैं अपितु देखने आये हैं। अर्जुन वहाँ धृतराष्ट्र के साथ और माता गान्धारी के साथ बैठा हुआ सुनकर भीम से कहता है कि इस समय इनको दुःखी करना उचित नहीं है। अतः आइये चलें, यह सुन कर भीमसेन अर्जुन को डाटता हुआ कहता है कि अरे मूर्ख! शिष्टाचार का अतिक्रमण करना उचित नहीं है और माता-पिता को प्रणाम न करके जाना भी उचित नहीं है। इस कारण भीम समीप जाकर धृतराष्ट्र और गान्धारी को प्रणाम करता हुआ कहता है कि-

चूर्डिताशेषकौरव्यः क्षीबो दुःशासनाऽसृजा।

भङ्क्ता सुयोधनस्योर्वोभीमोऽयं शिरसाऽञ्चति।।

यह सुनकर धृतराष्ट्र उसके उद्धत स्वभाव की निन्दा करते हैं, फिर क्या था, भीम का क्रोध प्रज्वलित हो उठा और कहता है कि-

कृष्णा केशेषु कृष्टा तव सदसि वधूः पाण्डवानां नृपैर्यः

सर्वे ते क्रोधवह्नौ कृशशलभकुलाऽवज्ञया येन दग्धाः।

एतस्माच्छ्वावयेऽहं न खलु भुजबलश्लाघया नापि दर्पात्

पुत्रैः पौत्रैश्च कर्मण्यतिगुरुणि कृते तात साक्षी त्वमेव।।

असाधारण क्रोधी स्वभाव- धृतराष्ट्र के समीप दुर्योधन के अपमानजनक कटु वचनों को सुनकर भीम कहता है कि अरे भरत कुल के कलंक दुर्योधन, यदि मेरी गदा की कोटि से विदीर्ण होती हुई शब्द करती हुई हड्डियों वाले तेरे शरीर के मध्य में माता-पिता विघ्न न डालें तो क्या मैं दुःशासन का अनुसरण करने के लिये आपको यहीं न नष्ट कर दूँ? इसी भाव को निम्न प्रकार देखिये -

अत्रैव किं न विशसेयमहं भवन्तं

दुःशासनानुगमनाय कटु प्रलापिन्।

विघ्नं गुरुर्न कुरुते यदि मद्गदाग्र-

निर्भिद्यमानरणिताऽस्थिनि ते शरीरे।।

भीमसेन दुर्योधन को फटकारते हुये कहता है कि अरे मूर्ख! तेरे वंशरूपी कमलिनी लता के लिए मतवाले हाथी के समान मुझ भीम के क्रुद्ध होने पर जो स्त्रियों के समान आँसू बहाकर तूने शोक को हल्का किया है तथा भाई दुःशासन के वक्षःस्थल को फाड़ने में तू साक्षी रहा है, इन्हीं कारणों से तू अभी तक जीवित रह सका है।इसी भाव को व्यक्त करते हुये भट्टनारायण ने लिखा है कि-

शोकं स्त्रीवन्नयनसलिलैर्यत्परित्याजितोऽसि

भ्रातुर्वक्षःस्थलविघटने यच्च साक्षी कृतोऽसि।

आसीदेतत्तव कुनृपतेः कारणं जीवितस्य

क्रुद्ध युष्मस्कुलकमलिनीकुञ्जरे भीमसेने।।

दृढ़ प्रतिज्ञ-भीम ने अपनी दृढ़ प्रतिज्ञा का निर्वाह करने के लिये ही सन्धि प्रस्ताव का विरोध किया था और असाधारण वीरता से दुःशासन के वक्षस्थल का रक्तपान करने में सफलता प्राप्त की। जिस समय दुर्योधन सरोवर में छुपकर समय यापन कर रहा था तो भीमसेन ने दुर्योधन की कुलीनता और वीरता को कटु शब्दों में धिक्कारा था। अन्त में विवश होकर दुर्योधन सरोवर से बाहर निकल आया और भीम के साथ गदा युद्ध किया, जिसके परिणामस्वरूप भीम दुर्योधन का वध करके प्रतिज्ञा में सफल हुआ। भीमसेन युधिष्ठिर से कहता है कि-

भूमौ क्षिप्तं शरीरं निहितमिदमसृक्चन्दनाभं निजाङ्गे
लक्ष्मीरार्ये निषण्णा चतुरुदधिपयः सीमया सार्धमुर्व्या।
भृत्या मित्राणि योधाः कुरुकुलमखिलं दग्धमेतद्रणाग्नौ
नामैकं यद्ववीषि क्षितिप तदधुना धार्तराष्ट्रस्य शेषम्।।

अन्त ने भीम द्रौपदी से कहता है कि राजाओं की सभा में जिस नर पशु दुःशासन ने तुमको घसीटा था, उस दुःशासन के रक्तपान से गाढ़े रक्त से लिप्त मेरे दोनों हाथों का स्पर्श कर, हे प्रियतमे ! तुम्हारे अपमान से उत्पन्न क्रोधाग्नि को शान्त करने के लिये, मेरी गदा से चूर्ण हुई जांघों वाले कौरवराज दुर्योधन का ताजा रक्त मेरे शरीर के अङ्ग अङ्ग में समाया हुआ है। ऐसा कहकर द्रौपदी के बालों को संवारता है।

भीम बलशाली तो इतना है कि समंतपंचक के सरोवर को अकेले इस प्रकार मथ डालता है कि उसका जल तट को लाँघकर निकल जाता है, बड़े-बड़े ग्राह बाहर फेंक दिए जाते हैं तथा सभी जीव-जन्तु व्याकुल हो जाते हैं।

वस्तुतः भीमसेन का चरित्र बहुत ही व्यापक, प्रभावशाली तथा आकर्षक है। उसकी ओजस्विता और अदम्य पराक्रम का परिचय उसके भाषणों से सर्वदा मिलता है।